अल्लाह के पैग़म्बर ﷺ के सद्व्यवहार के कुछ दर्शन

लेख

शैखुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब

अनुवाद

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

संशोधन

शफीकुर्रहमान ज़ियाउल्लाह मदनी

islamhouse.com

1429-2008

#

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अति मेहरबान और दयालू है।

प्राक्कथन

जब पूर्वी और पश्चिमी दुनिया विचारधारा के अन्धकार और भ्रष्ट उपासना के अन्धेरे में जीवन यापन कर रही थी, मानव-जाति नाना प्रकार की अज्ञानता, मूर्खता, पिछड़ापन, पतन, नैतिक (अख़्लाक़ी) और सांस्कृतिक गिरावट से जूझ रही थी। अरब द्वीप में लोग मूर्तियों को पूजते, लड़कियों को मार डालते, वेश्या और व्यभिचार से कमाई करते ... फारसवासी अग्नी पूजा के साथ ही अत्याचारी **किस्रा** की भी पूजा में लिप्त थे जिस ने फारसी सम्प्रदाय के मध्य घृणा (नफरत) और ऊँच-नीच को फैला रखा था... हिरक़्ल ने रूमानियों के बीच सामप्रदायिक भेद भाव को भड़का रखा था। चुनाँचे वह अपने धर्म के विरोधियों का वध कर देता था, सत्ताधारी रूमानी शासन आर्थिक, रजनीतिक और प्रशासनिक भ्रष्टाचार से पीड़ित थी... यहाँ तक उन्हों ने जन्ता पर

#

टैक्स लगा रखा था जिसे ''सिर का टैक्स'' कहा जाता था जिसे नागरिक अपने सिर को कटने से बचाने के बदले देता था!

इसी कारण हम देखते हैं कि सामान्य रूप से सामूहिक आत्म-हत्या की पूरी तैयारी थी। उस समय मानव जाति आत्म हत्या से केवल प्रसन्न ही नहीं थी, बल्कि उस पर टूटी पड़ रही थी!!

इस प्रकार दुनिया अत्याचार और पतन तथा पिछड़ेपन के समुद्र में हचकोले खा रही थी कि अरब द्वीप के पवित्र नगर मक्का मुकर्रमा में अल्लाह के सन्देष्टा मुहम्मद सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम के रूप में एक उज्ज्वल प्रकाश फूटा जिस की किरणों से सर्व संसार प्रकाश मान हो गया और उसे इस्लाम का मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ।

इस प्रकार भटकती हुई मानवता को एक वास्तविक मार्ग दर्शक, रक्षक और मुक्ति देने वाला महान उपकारी, कृपालू, निष्काम और शुद्धहृदय पुरूष प्राप्त हो गया। जिसे उसकी क़ौम के लोगों ने ''**सादिक़**'' (सच्चा, सत्यवादी) और ''**अमीन**'' (विश्वस्त, अमानतदार) की उपाधि से जानती थी और जिस को उस के पालनहार ने इस तरह से सम्बोधित किया:

#

"हम ने आप को सर्व संसार के लिए रहमत -करूणा- बनाकर भेजा है।" (सूरतुल अम्बिया:१०७)

चुनांचे सर्व संसार के पालनहार ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैग़ाम को विश्व व्यापी करूणा और दया घोषित किया है जो सर्व समय काल में सर्व संसार के लोगों को सामान्य रूप से सम्मिलित है। यह रहमत (करूणा और दया) किसी समय अथवा किसी सम्प्रदाय के साथ विशिष्ट नहीं है। अर्थात प्रत्येक मानव आप के निकट दया का पात्र है।

पैग़म्बर सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम स्वयं फरमाते हैं कि: **"मैं करूणा बन कर आया हूँ जो सर्व संसार के पालनहार की ओर से संसार वालों के लिए एक उपहार है।"**

यदि आप इसकी पुष्टि चाहते हैं तो पैग़म्बर सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम की जीवनी का अध्ययन करें, आप को पग पग पर पैग़म्बर सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम की करूणा और दया के अनुपम दर्शन का अनुभव होगा।

तथा पैगम्बर सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम सद्व्यवहार और शिष्टाचार के जिस शिखर पर पदासीन थे वहाँ तक न किसी की पहुँच हुई है और न होगी। और ऐसा क्यों न

#

हो जब सर्व संसार का पालनहार ही इस की गवाही देते हुए कथित है:

"निःसन्देह आप महान आचरण -अखलाक़- से सम्मानित हैं।" (सूरतुल-क़लमः४)

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम स्वयं फरमाते हैं कि: **"मुझे पैग़म्बर बना कर भेजा ही इस लिए गया है कि मैं अच्छे अखलाक़ -शिष्टाचार- की पूर्ति कर दूँ।"**

इस की पुष्टि में आप के जीवन साथी आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा का यह कथन कितना तर्क पूर्ण है कि: **"क़ुरआन करीम ही आप का अख़लाक़ -आचार- था।"**

फिर सर्व संसार के लिए कितनी लज्जा की बात है कि ऐसे महान पुरूष के विरूध मीडिया ने युद्ध छेड़ रखा है और उन्हें बदनाम करने के मूर्ख प्रयास किये जा रहे हैं। "**रहमत**" -करूण, दया- जो आप का सबसे महान और विशेष गुण है और जिस से आप के बड़े से बड़े शत्रु भी प्रभावित हुए बिना न रह सके, उसी पर प्रश्न का चिन्ह लगाया जा रहा है !!

सच्च तो यह है कि कुत्तों के भूंकने से बादल का कुछ नहीं बिगड़ता, किन्तु यह संसार के प्रत्येक मनुष्य के लिए कलंक का कारण है कि मानव जाति के मुक्तिदाता, ईश्वर

#

के अन्तिम सन्देष्टा, इस्लाम और शान्ति के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस प्रकार अपमान किया जाए।

यदि आप इस महान पुरूष के सद्व्यवहार और शिष्टाचार से अनभिग और अपरिचित हैं या किसी भ्रांति के शिकार हैं, तो विशेष रूप से आप के लिए पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (उन पर अल्लाह की कृपा और शान्ति अवतरित हो) के सद्व्यवहार के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं, जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की व्यक्तित्व को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध हों गे। तत्व पश्चात आप स्वयं निर्णय कर सकते हैं कि इस न्याय-प्रिय महान पुरूष के साथ वर्तमान समय के **"न्याय के दावेदार"** कितना बड़ा अन्याय कर रहे हैं!!!

सर्व जगत के पालनहार से हमारी प्रार्थना है कि इस लेख को पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महान आचार से मानवता को परिचित कराने में लाभदायक बनाये।

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*

* atazia75@gmail.com

पैग़म्बर ﷺ के सद्व्यवहार के कुछ दर्शन

1. परिपूर्ण बुद्धिः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम परिपूर्ण बुद्धिमानता की उस चरम सीमा पर पहुंचे हुए थे जहाँ आप के सिवा कोई मनुष्य नहीं पहुंचा है।

2. एहतिसाब (अर्थात किसी भी काम का बदला अल्लाह तआला से चाहना): पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो भी काम करते थे उसका बदला केवल अल्लाह तआला से चाहते थे और इस मैदान में आप सब के नायक थे। आप को अपनी दावत के फैलाने के मार्ग में बहुत कष्ट और कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, किन्तु आप ने धैर्य के साथ और अल्लाह की ओर से अज्र व सवाब और बदले की उम्मीद रखते हुए सब कुछ सहन कर लिया। अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: गोया मैं पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख रहा हूँ कि आप एक ईश्दूत का बयान कर रहे थे जिन्हें उनकी क़ौम ने मारा-पीटा था और वह अपने चेहरे से खून पोंछते हुए कह रहे थे: "ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को क्षमा कर दे क्योंकि वह नहीं जानती"। (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

और जुन्दुब बिन सुफ्यान कहते हैं: एक लड़ाई के दौरान पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अंगुली घायल होगई तो आप ने फरमाया:

"तू एक अंगुली है जो घायल होगई है, जो तकलीफ तुझे पहुंची है वह अल्लाह के रास्ते में है"। (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

3. इख्लास (निःस्वार्थता) : (अर्थात कोई भी काम केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए करना) पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने तमाम कामों और मामलों में मुख़्लिस -निःस्वार्थ- थे, जैसाकि अल्लाह तआला ने आपको इसका आदेश दिया है, अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿قُلْ إِنَّ صَلاَتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لاَ شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَاْ أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ﴾ [الأنعام:١٦٢- ١٦٣]

"आप कह दीजिये कि निःसन्देह मेरी नमाज़ और मेरी समस्त उपासनायें (इबादत) और मेरा जीना और मेरा मरना; ये सब केवल अल्लाह ही के लिए है जो सारे

संसार का पालनहार है। उसका कोई साझी नहीं और मुझे इसी का आदेश हुआ है और मैं सब मानने वालों में से पहला हूँ''। (सूरतुल-अनआम:१६२-१६३)

4. सद्व्यहार -खुश अख्लाक़ी- और सामाजिकताः

आप की पत्नी आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से जब आप के आचार के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहाः **''क़ुरआन करीम ही आप का आचार -अख्लाक़- था''**। (मुसनद अहमद)

इस का अर्थ यह है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ुरआन करीम के आदेशों का पालन करने वाले और उसकी मना की हुई (निषिधि) चीज़ों से बचने वाले थे। उसके अन्दर जिन विशेषताओं और गुणों का उल्लेख किया गया है उनको अपनाने वाले और अपने आप को उनके अनुसार ढालने वाले थे। जिन ज़ाहिरी या बातिनी (प्रत्यक्ष या प्रोक्ष) बुराईयों से क़ुरआन ने रोका है उन्हें त्यागने वाले थे।

और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है; क्योंकि आप का ही यह फ़र्मान हैः

#
“अल्लाह तआला ने मुझे उत्तम अख़्लाक़ और अच्छे कामों की तक्मील (परिपूर्ण करने) के लिए भेजा है”।

(अदबुल-मुफरद लिल-बुखारी, मुसनद अहमद)

अल्लाह तआला ने क़ुरआन में अपने इस कथन के द्वारा आप की विशेषता का वर्णन किया है:

﴿وَإِنَّكَ لَعَلَى خُلُقٍ عَظِيمٍ﴾ [القلم:٤]

“निःसन्देह आप महान अख़्लाक़ पर हैं”। (सूरतुल-क़लम:४)

अनस बिन मालिक *-जिन्हों ने दस साल तक रात व दिन और यात्रा व निवास में आपकी सेवा की और उसके दौरान आपके अहवाल का ज्ञान प्राप्त किया-* कहते हैं: अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों में सब से उत्तम अख़्लाक़ के मालिक थे। (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

तथा वह कहते हैं: “पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न गाली बकते थे, न फक्कड़ बाज़ी करते थे और न शाप देते थे। अगर आप किसी को डांट फटकार करते थे तो केवल इतना कहते थे: उसे क्या हो गया है उसकी पेशानी खाक आलूद हो (मट्टी में सने) ।” (सहीह बुखारी)

5. अदब व सलीक़ा (सभ्यता और शिष्टता): सह्ल बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पीने वाली कोई चीज़ लाई गई जिस में से आप ने पिया। आपके दाहिने ओर एक बच्चा और आपके बायें ओर बड़े-बड़े लोग थे, आप ने बच्चे से कहा: **"क्या तुम मुझे यह इजाज़त देते हो कि यह (पीने वाली चीज़) इन लोगों को दे दूँ"**? बच्चे ने कहा: अल्लाह की क़सम मैं आपसे मिलने वाले अपने हिस्से पर किसी को प्राथमिकता नहीं दे सकता। सहाबी कहते हैं: चुनाँचे आप ने उस चीज़ को उस बच्चे के हाथ में रख दिया। (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

6. सुल्ह पसन्दी (सन्धि प्रियता) : आप सुधार और सन्धि प्रिय थे, सह्ल बिन सअद कहते हैं: कुबा वालों ने आपस में लड़ाई-झगड़ा किया यहाँ तक कि एक दूसरे पर पत्थर बाज़ी किये, जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसकी सूचना मिली तो आप ने फरमाया: "चलो चलकर हम उनके बीच समझौता -सुल्ह- करा दें"। (सहीह बुख़ारी)

7. भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना: अब्दुल्लाह बिन अब्बास बयान करते हैं कि पैग़म्बर

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी के हाथ में सोने की एक अंगूठी देखी तो उसे निकाल कर फेंक दिया और फरमायाः **"तुम में से कोई व्यक्ति आग का अंगारा ले कर अपने हाथ में डाल लेता है!"** जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चले गये तो उस आदमी से कहा गया कि अपनी अंगूठी ले लो और उस से लाभ उठाओ, उसने कहाः नहीं, अल्लाह की क़सम! जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे फेंक दिया तो मैं उसे कभी भी नहीं उठा सकता। (सहीह मुस्लिम)

8. पवित्रता और सफाई पसन्दीः आप बहुत पवित्रता और स्वच्छता प्रिय थे, मुहाजिर बिन कुनफुज़ बयान करते हैं कि वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये इस हाल में कि आप पेशाब कर रहे थे। उन्हों ने आप को सलाम किया तो आप ने उसका जवाब नहीं दिया यहाँ तक कि आप ने वुज़ू कर लिया, फिर आप ने उनसे क्षमा याचना करते हुए कहा : **"मैं ने बिना पाकी के अल्लाह तआला का ज़िक्र (स्मरण) करना पसन्द नहीं किया।"** (सुनन अबूदाऊद)

9. ज़ुबान की सुरक्षाः अब्दुल्लाह बिन अबी औफा बयान करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

अल्लाह का अधिक ज़िक्र करते थे, निरर्थक और बेकार बात नहीं करते थे, नमाज़ लम्बी करते थे और ख़ुत्बा छोटा, और किसी विधवा या मिस्कीन के साथ चलकर उसकी आवश्यकता पूरी करने में कोई घृणा नहीं करते थे। (सुनन नसाई)

10. अधिक उपासनाः आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैंः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम रात को जाग कर नमाज़ पढ़ते थे यहाँ तक कि आपके दोनों पाँव फट जाते थे, इस पर आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप से पूछाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आप ऐसा क्यों करते हैं? जबकि अल्लाह तआला ने आप के अगले और पिछले गुनाह माफ कर दिये हैं। आप ने फरमायाः **"क्या मैं अल्लाह का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूँ?"** (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

11. नम्रता और नर्म दिलीः अबू-हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः तुफैल बिन अम्र दौसी और उनके साथी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए और उन्हों ने कहाः ऐ अल्लाक के पैग़म्बर! क़बीला दौस वालों ने अवहेलना और इन्कार किया है, आप उन पर बद्-दुआ (शाप) कर दीजिए। इस पर कहा गया कि दौस क़बीला का अब सर्वनाश हुआ। तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने कहा: **"ऐ अल्लाह तू दौस वालों को हिदायत (मार्ग दर्शन) प्रदान कर और उन्हें लेकर आ।"** (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

12. अच्छी वेशभूषा : बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आकार दरमियाना था, दोनों कन्धों के बीच दूरी थी, बाल दोनों कानों की लुरकी तक पहुंचते थे। मैं ने आप को एक लाल जोड़ा पहने हुए देखा। मैं ने आप से अधिक सुन्दर कभी कोई चीज़ नहीं देखी। (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

13. दुनिया से बे-रग़बती (अरूचि): अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक चटाई पर सोए थे, आप उठे तो आप के पहलू में उसके निशानात थे, इस पर हम ने कहा: ऐ अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या हम आप के लिए एक बिस्तर की व्यवस्था न कर दें? आप ने फरमाया: **"मुझे दुनिया से क्या लेना देना, मैं तो दुनिया में उस सवार के समान हूँ जिसने एक पेड़ के नीचे विश्राम किया फिर उसे छोड़ कर चला गया।"** (सुनन-त्रिमिज़ी)

अम्र बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी वफात के समय न

कोई दिर्हम छोड़ा न दीनार, न कोई ग़ुलाम छोड़ा न कोई लौण्डी। आप ने केवल अपना सफेद खच्चर, हथियार और एक टुकड़ा ज़मीन छोड़ा जिसे आपने ख़ैरात कर दिया। (सहीह बुखारी)

14. ईसार (परित्याग): अर्थात अपने ऊपर दूसरे को प्राथमिकता देना। सहल बिन सअद बयान करते हैं कि: एक महिला एक बुर्दा (चादर) लेकर आई। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (सहाबा से) कहा: "**क्या तुम जानते हो कि बुर्दा क्या है?**" आप से कहा गया: जी हाँ, ये वह चादर होती है जिसके किनारे बेल बूटे बने होते हैं। उस महिला ने कहा: ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! मैं ने इसे आप को पहनाने के लिए अपने हाथ से बुना है। चुनाँचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे ले लिया, आप को इसकी आवश्यकता थी। कुछ देर बाद आप उसे पहने हुए हमारे पास आए तो क़ौम के एक आदमी ने कहा: ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! यह मुझे पहनने के लिए दे दीजिये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "ठीक है"। इसके बाद कुछ देर आप मज्लिस में बैठे रहे, फिर घर वापस गए, चादर को लपेटा और उसे उस आदमी के पास भिजवा दिया। क़ौम के लोगों ने उस से कहा: तुम ने चादर माँग कर अच्छा नहीं किया, जबकि तुम अच्छी तरह जानते

हो कि आप किसी साईल (मांगने वाले) को खाली हाथ नहीं लौटाते हैं। उस आदमी ने कहा: अल्लाह की क़सम मैं ने इसे केवल इस लिए माँगा है ताकि यह मेरे मरने के दिन मेरा कफन बन जाए। सहल कहते हैं, चुनाँचे वह चादर उनकी कफन बनी थी। (सहीह बुखारी)

15. ईमान की शक्ति और अल्लाह पर भरोसा: अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं: जब हम ग़ार (सौर नामी गुफा) में छुपे थे तो मैं ने मुश्रिकों के पावों को अपने सर के पास देखा और मैं बोल पड़ा: ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! अगर उन में से कोई आदमी अपने पावँ की तरफ निगाह करे तो हमें अपने पाँव के नीचे देख लेगा। इस पर आप ने फरमाया: **"ऐ अबू-बक्र ऐसे दो आदमियों के बारे में तुम्हारा क्या विचार है जिनका तीसरा अल्लाह है"**। (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

16. कृपा और सहानुभूति (शफ़्क़त और रहम दिली) : अबू-क़तादा बयान करते हैं: अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अबुल-आस की बेटी उमामा को अपने कन्धे पर उठाए हुए हमारे पास आए और नमाज़ पढ़ाई, जब आप रुकूअ में जाते तो उन्हें नीचे उतार

देते और जब रुकूअ से उठते तो उन्हें दुबारा उठा लेते। (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

17. सरलता और आसानी: अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि : पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: "मैं नमाज़ शुरू करता हूँ और मेरा इरादा नमाज़ को लम्बी करने का होता है, लेकिन मैं बच्चे के रोने की आवाज़ सुन कर अपनी नमाज़ हल्की कर देता हूँ; क्योंकि मैं जानता हूँ कि उसके रोने से उसकी माँ को कितनी परेशानी होगी"। (सहीह बुखारी व मुस्लिम)

18. अल्लाह का डर और परहेज़गारी (संयम): अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: **"कभी-कभार मैं अपने घर वापस लौटता हूँ तो अपने बिछौने पर खजूर पड़ा हुआ पाता हूँ, मैं उसे खाने के लिए उठा लेता हूँ, फिर मैं डरता हूँ कि कहीं यह सदक़ा (ख़ैरात) का न हो, यह सोचकर मैं उसे रख देता हूँ।"** (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

19. दानशीलता के साथ खर्च करना: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि: इस्लाम लाने पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो कुछ भी

मांगा गया आप ने उसे प्रदान कर दिया। वह कहते हैं: चुनांचे एक आदमी आप के पास आया तो आप ने उसे दो पहाड़ों के बीच चरने वाली बकरियों का रेवड़ प्रदान कर दिया, वह अपनी क़ौम के पास वापस लौट कर गया तो कहा: ऐ क़ौम के लोगो! इस्लाम ले आओ; क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतनी बख्शिश (अनुदान) देते हैं कि फाक़ा का कोई डर नहीं होता है। (सहीह मुस्लिम)

20. आपसी सहयोग एंव सहायता प्रियता: आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से जब यह पूछा गया कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घर में क्या किया करते थे? तो उन्हों ने कहा: अपने परिवार की सेवा-सहयोग में लगे रहते थे, और जब नमाज़ का समय हो जाता तो नमाज़ के लिए निकल पड़ते थे। (सहीह बुखारी)

बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: मैं ने ख़न्दक़ के दिन पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि आप मट्टी ढो रहे थे यहाँ तक कि मट्टी से आपके सीने के बाल ढँक गये, और आप के बाल बहुत अधिक थे, इसी हालत में आप अब्दुल्लाह बिन रवाहा के यह रज्ज़ (लड़ाई में पढ़ी जाने वाली छंद) पढ़ रहे थे:

ऐ अल्लाह! अगर तू न होता तो हम हिदायत (मार्ग दर्शन) न पाते।

न सदक़ा (ख़ैरात) करते, न नमाज़ पढ़ते।

अतः हम पर सकीनत (शान्ति) नाज़िल कर।

और यदि हमारी मुठभेड़ हो तो हमारे पाँव जमा दे।

दुश्मनों ने हम पर अत्याचार किया है।

अगर वह हमें फितने में डालना चाहें गे तो हम इसका विरोध करें गे।

बरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आप इन्हें ज़ोर से पढ़ते थे। (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

21. सच्चाईः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नी आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा आप के बारें में कहती हैंः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नज़दीक झूठ से सर्वाधिक नापसन्दीदा (घृनास्पद) कोई और आदत नहीं थी। एक आदमी अल्लाह के पैग़म्बर के पास झूठ बोलता था तो आप उसकी वह बात अपने दिल में लिए रहते थे यहाँ तक कि आप को यह पता न चल जाए कि उसने उस से तौबा कर ली है। (सुनन त्रिमिज़ी)

आप के दुश्मनों तक ने भी आपकी सच्चाई की गवाही दी है। यह अबू-जह्ल है जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सब से कट्टर दुश्मनों में से था, उसने एक दिन आप से कहा: ऐ मुहम्मद! मैं आप को झूठा नहीं कहता, किन्तु आप जो कुछ लेकर आए हैं और जिसकी दावत देते हैं, मैं उसका इन्कार करता हूँ। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी:

﴿قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزُنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ فَإِنَّهُمْ لاَ يُكَذِّبُونَكَ وَلَكِنَّ الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللّهِ يَجْحَدُونَ﴾ [الأنعام:٣٣]

"हम अच्छी तरह जानते हैं कि जो कुछ यह कहते हैं इससे आप दुखी होत हैं। सो यह लोग आप को नहीं झुठलाते, लेकिन यह ज़ालिम लोग तो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं।" (सूरतुल-अनआम:३३)

२२. अल्लाह की हुर्मतों (धर्म-निषिध चीज़ों) का सम्मान : आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब भी दो कामों की बीच चयन करने का अवसर दिया जाता तो आप वही काम चयन करते जो आसान हो, जब तक कि वह गुनाह का काम न होता। अगर वह गुनाह का काम होता तो आप उस से अति अधिक दूर रहते। अल्लाह की क़सम

आप ने कभी अपने नफ़्स (स्वार्थ) के लिए बदला नहीं लिया, किन्तु अगर अल्लाह की हुर्मतों को पामाल किया जाता था तो आप अल्लाह के लिए अवश्य बदला लेते थे। (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

23. प्रफुल्लता (हंसमुख चेहरा): अब्दुल्लाह बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: मैं ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अधिकतर तबस्सुम करने (मुसकुराने) वाला किसी को नहीं देखा। (सुनन त्रिमिज़ी)

24. अमानत दारी और प्रतिज्ञा पालन: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अमानत दारी अपनी मिसाल आप (अनुपम) थी। ये मक्का वाले जिन्हों ने उस समय जब आप ने अपनी दावत का एलान किया, आप से दुश्मनी का बेड़ा उठा लिया और आप पर और आप के मानने वालों पर अत्याचार किया, इनके और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बीच इतनी दुश्मनी के बावजूद भी अपनी अमानतें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ही रखते थे। यह अमानत दारी उस समय अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई जब इन्हीं मक्का वालों ने आप को हर प्रकार का कष्ट सहने के बाद मदीना की ओर हिज्रत करने पर विवश (मजबूर) कर दिया तो

आपने अपने चचेरे भाई अली बिन अबू-तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु को यह आदेश दिया कि वह तीन दिन के लिए अपनी हिज्रत स्थगित कर दें ताकि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास (मक्का वालों की) जो अमानतें थीं उन्हें उनके मालिकों को वापस लौटा दें। (सीरत इब्ने-हिशाम ३/११)

इसी प्रकार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रतिज्ञा पालन का एक प्रदर्शन यह है कि जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुहैल बिन अम्र से हुदैबिया के दिन सन्धि की अवधि (मुद्दत) पर समझौता कर लिया और सुहैल बिन अम्र ने जो शर्तें लगाई थीं उन में एक शर्त यह भी थी कि उसने कहाः **हम में से जो भी आदमी - चाहे वह आप के दीन ही पर क्यों न हो - आपके पास जाता है तो आप उसे वापस कर देंगे और उसे हमारे हवाले कर देंगे।** और इस शर्त के बिना सुहैल ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुल्ह करने से इन्कार कर दिया तो मोमिनों ने इसे नापसन्द किया और क्रोध प्रकट किया। चुनांचे उन्हों ने इसके बारे में बात चीत की। फिर जब सुहैल ने इस शर्त के बिना पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुल्ह करने से इन्कार कर दिया तो आप ने इस पर सुल्ह कर ली। अभी सुल्ह नामा लिखा ही जा

रहा था कि सुहैल बिन अम्र के बेटे अबू-जन्दल बेड़ियों में जकड़े हुए आ गए। वह मक्का के निचले हिस्से से निकल कर आए थे। उन्हों ने अपने आप को मुसलमानों के बीच डाल दिया। यह देख कर अबू-जन्दल के बाप सुहैल ने कहाः ऐ मुहम्मद! यह पहला व्यक्ति है जिस के बारे में मैं आप से मामला करता हूँ कि आप इसे वापस कर दें। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहाः "**इसको मेरे लिए छोड़ दो**"। उसने कहाः मैं इसे आप के लिए नहीं छोड़ सकता। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने कहाः "**नहीं इतना तो कर ही दो**"। उसने कहाः मैं ऐसा नहीं कर सकता। अबु-जन्दल को इसका एहसास होगया, तो उन्हों ने मुसलमानों को उकसाते (जोश दिलाते) हुऐ कहाः "मुसलमानो! क्या मैं मुश्रिकों की ओर वापस कर दिया जाऊँ हालांकि मैं मुसलमान होकर आया हूँ? क्या तुम मेरी परेशानी नहीं देख रहे हो?" उन्हें अल्लाह के रास्ते में बहुत अधिक कष्ट दिया गया था।

चुनाँचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रतिज्ञा का पालन करते हुए उन्हें सुहैल बिन अम्र की ओर वापस कर दिया। (सहीह बुखारी)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू-जन्दल से फरमायाः ''अबू-जन्दल! धीरज से काम लो और इस पर अल्लाह से पुण्य (अज्र व सवाब) की आशा रखो। अल्लाह तुम्हारे लिए और तुम्हारे साथ जो अन्य कमज़ोर मुसलमान हैं उन सब के लिए कुशादगी (आसानी) और कोई रास्ता अवश्य पैदा करेगा। हम ने इन लोगों से सुल्ह कर ली है और हमारे और इनके बीच अह्द व पैमान (प्रतिज्ञा) लागू हो चुका है और हम प्रतिज्ञा भंग (अहद शिकनी) नहीं कर सकते''। (मुसनद अहमद)

फिर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना वापस तशरीफ ले आए, तो कुरैश का अबू-बसीर नामी एक आदमी मुसलमान हो कर आ गया, तो कुरैश ने उसको वापस लेने के लिए दो आदमियों को भेजा, उन्हों ने कहाः आप ने हम से जो वादा किया था उसको पूरा कीजिये। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू-बसीर को उन दोनों आदमियों के हवाले कर दिया।

25. वीरता और बहादुरीः अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः मैं ने बद्र के दिन देखा है कि हम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आड़ लेते थे, और हमारे बीच आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बढ़ कर दुश्मन के क़रीब

कोई नहीं था, उस दिन आप सब से अधिक बल्वान और शक्तिशाली थे। (मुसनद अहमद)

लड़ाई के मैदान से बाहर आप की बहादुरी और दिलेरी के बारे में अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों में सब से अच्छे और सब से बड़े वीर-बहादुर थे। एक रात मदीना वाले घबराहट और दह्शत के शिकार होगए और आवाज़ (शोर) की ओर निकले, तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें रास्ते में वापस आते हुए मिले। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों से पहले ही आवाज़ की ओर पहुंच कर यह निरीक्षण कर चुके थे कि कोई खत्रा नहीं है। उस समय आप अबू-तल्हा के बिना ज़ीन के घोड़े पर सवार थे और गर्दन में तलवार लटकाए हुए थे, और कह रहे थे: **"डरो नहीं, डरो नहीं"**।

फिर आप ने कहा: **"हम ने इस (घोड़े) को समुद्र पाया"**, या आप ने यह कहा कि : **"यह (घोड़ा) समुद्र है"**। (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

मदीना वाले आवाज़ का शोर सुनकर घबराहट के आलम में हक़ीक़त का पता लगाने के लिए बाहर निकलते हैं, तो रास्ते में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अकेले आवाज़

की ओर से वापस लौटते हुए मिलते हैं। आप उन्हें इतमिनान दिलाते हैं। आप एक ऐसे घोड़े पर सवार हैं जिसकी ज़ीन नहीं कसी गई थी; क्योंकि स्थिति का तक़ाज़ा था कि जल्दी की जाए। आप अपनी तलवार लटकाए हुए थे; क्योंकि उसके इस्तेमाल की आवश्यकता पड़ सकती थी। और आप ने उन्हें बताया कि आपके पास जो घोड़ा था वह समुद्र अर्थात बहुत तेज़ था, इसलिए आप ने मामले का पत लगाने के लिए अपने साथ लोगों के निकलने की प्रतीक्षा नहीं की।

उहुद की लड़ाई में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम से परामर्श (सलाह-मश्वरा) किया तो उन्हों ने लड़ाई करने की सलाह दी, और स्वयं पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की राय दूसरी थी, किन्तु आप ने उनके मश्वरा को स्वीकार कर लिया। लेकिन बाद में सहाबा को इस पर पछतावा हुआ क्योंकि आपकी चाहत दूसरी थी। अन्सार ने (आपस में) कहा हम ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की राय को ठुकरा दिया। चुनाँचे वह लोग आप के पास आए और कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आप को जो पसन्द हो वही कीजिए, उस समय आप ने फरमायाः **"कोई नबी जब अपना हथियार**

पहन ले तो मुनासिब नहीं कि उसे उतारे यहाँ तक कि वह लड़ाई न कर ले"। (मुसनद अहमद)

26. दानशीलता और सखावतः इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं: अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों में सब से बढ़ कर सखावत का दरिया -अति दानी- थे, और आपकी सखावत का दरिया रमज़ान में उस समय सब से अधिक उफान पर होता था जब जिब्रील आप से मुलाक़ात करते थे, और जिब्रील आप से रमज़ान की हर रात में मुलाक़ात करते थे और क़ुर्आन का दौर कराते थे, उस समय पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खैर की सखावत में तेज़ हवा से भी आगे होत थे। (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

अबू-ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं: मैं मदीना के हर्रा (काले रंग की पत्थरेली ज़मीन) में चल रहा था कि हम उहुद पहाड़ के सामने आगए, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा: "ऐ अबू-ज़र"! मैं ने कहा: मैं हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आप ने फरमाया: "मुझे यह पसन्द नहीं है कि उहुद पहाड़ मेरे लिए सोना बन जाए और एक या तीन रात बीत जाए और उस में से मेरे पास एक दीनार भी बाक़ी रह जाए, सिवाए इसके कि मैं उसे क़र्ज

के लिए रख लूँ, सिवाए इसके कि मैं उसे अपने दायें, बायें और पीछे अल्लाह के बन्दों में बांट दूँ।'' (सहीह बुखारी)

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि : ऐसा कभी न हुआ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कोई चीज़ मांगी गई हो और आप ने नहीं कह दिया हो। (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

27. हया (शर्म): अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर्दे में रहने वाली कुंवारी औरत से भी अधिक हयादार (शर्मीले) थे, अगर आप कोई अप्रिय (नापसन्दीदा) चीज़ देखते तो हमें आपके चेहरे से उसका पता चल जाता। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

28. आजिज़ी व ख़ाकसारी (नम्रता व विनीतता): पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों में सब से बढ़ कर ख़ाकसार (विनीत) थे। आप की ख़ाकसारी और इन्किसार का यह हाल था कि मस्जिद में दाख़िल होने वाला आप को आपके साथियों के बीच पहचान नहीं पाता था। अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक बार हम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मस्जिद में बैठे थे कि एक आदमी अपने ऊँट पर

सवार अन्दर प्रवेश किया और उसे मस्जिद में बैठा कर बाँध दिया, फिर उन लोगों से कहाः तुम में से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कौन हैं? उस समय पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके बीच टेक लगाए हुए बैठे थे। तो हम ने कहाः यह टेक लगाए हुए गोरा आदमी..।"

(सहीह बुख़ारी)

इसलिए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथियों और अपने पास बैठने वालों से मुम्ताज़ और अलग-थलग होकर नहीं बैठते थे।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिस्कीन, कमज़ोर और ज़रूरतमन्द के साथ जाकर उनकी ज़रूरतों को पूरी करने से उपेक्षा (घृणा) नहीं करते थे, अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः मदीना की एक औरत जिसकी बुद्धि बराबर नहीं थी, उसने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप से मेरी एक ज़रूरत है, आप ने कहाः **"ऐ फलाँ की माँ ! तू जिस गली में चाहे मैं चल कर तेरी ज़रूरत पूरी करने के लिए तैयार हूँ।"** चुनाँचे आप उसके साथ किसी गली (रास्ते) में एकांत में मिले यहाँ तक कि वह अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ हो गई।

(सहीह मुस्लिम)

29. कृपा व दया (रहमत व शफ़्क़त): अबू-मस्ऊद अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: एक आदमी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहा: ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! अल्लाह की क़सम मैं फलाँ के कारण फज्र की नमाज़ से पीछे रह जाता हूँ क्योंकि वह हमें लम्बी नमाज़ पढ़ाता है। रावी (अबू-मस्ऊद) कहते हैं: जितना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस दिन नाराज़ हुए उस से बढ़ कर मैं ने आप को नसीहत के अन्दर कभी नाराज़ होते हुए नहीं देखा, फिर आप ने फरमाया:

> "ऐ लोगो! तुम में से कुछ लोग नफ़्रत -घृणा- पैदा करने वाले हैं, तुम में से जो भी लोगों को नमाज़ पढ़ाए वह हल्की नमाज़ पढ़ाए, क्यों कि उनमें बूढ़े, कमज़ोर और ज़रूरतमन्द लोग भी होते हैं।" (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

उसामा बिन ज़ैद बयान करते हैं: हम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बैठे थे कि आप के पास आप की किसी बेटी का क़ासिद आया कि वह आप को अपने बेटे को देखने के लिए बुला रही हैं जो जांकनी की हालत में है। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस आदमी से कहा:

"वापस जाकर उन्हें बतला दो कि जो कुछ अल्लाह ने ले लिया वह निःसन्देह अल्लाह ही का है और जो कुछ उसने प्रदान किया है वह भी उसी का ही है, और हर चीज़ का उसके पास एक निश्चित समय है। इसलिए उनसे कहो कि वह सब्र करें और अल्लाह से अज्र व सवाब की आशा रखें।"

आप की बेटी ने क़ासिद को यह कह कर दुबारा भेजा कि उन्हों ने क़सम खा लिया है कि आप अवश्य उनके पास आयें। इस पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उठ खड़े हुए और सअद बिन उबादा और मुआज़ बिन जबल भी आप के साथ हो लिए। बच्चे को आप के सानमे पेश किया गया, उसकी साँस ज़ोर-ज़ोर से चल रही थी गोया वह पुराने मशकीज़े में है। यह देख कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों से आँसू जारी होगए। सअद ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर ! यह क्या है? आप ने फरमायाः "यह वह दया और रहमत है जिसे अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिलों में डाल दिया है, और अल्लाह तआला अपने बन्दों में से दया व मेहरबानी करने वालों पर दया करता है"। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

30. बुर्दबारी (सहनशीलता) और क्षमाः अनस बिन मालिक कहते हैंः मैं पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ चल रहा था और उस समय आप एक मोटी किनारी वाली नजरानी चादर ओढ़े हुए थे कि एक दीहाती आदमी ने उसे पकड़ कर बहुत ज़ोर से खींचा यहाँ तक कि मैं ने देखा कि ज़ोर से खींचने के कारण आप की गर्दन पर चादर के निशान पड़ गये। फिर उसने कहाः हे मुहम्मद, तुम्हारे पास अल्लाह का जो माल है उस में से मुझे भी कुछ दो। आप ने उसकी ओर मुड़ कर देखा और मुसकुरा दिया। फिर आप ने उसे कुछ माल देने का आदेश दिया। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बुर्दबारी और तहम्मुल की एह अनुपम मिसाल ज़ैद बिन सअ्ना -वह एक यहूदी आलिम था- की हदीस है, उसने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुछ उधार दिया था जिसकी आप को कुछ मोअल्लफतुल-कुलूब (यानी नौ-मुस्लिम) की ज़रूरतों को निपटाने के लिए आवश्यकता पड़ गई थी। ज़ैद का कहना हैः अभी क़र्ज़ की अदायगी के नियमित समय में दो या तीन दिन बाक़ी थे कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक अन्सारी आदमी के जनाज़ा में निकले, आप के साथ अबू-बक्र, उमर, उसमान और आपके के अन्य सहाबा

रज़ियल्लाहु अन्हुम की एक जमाअत थी। जब आप जनाज़ा पढ़ चुके तो एक दीवार के पास जा कर बैठ गए, तो मैं ने आप की क़मीस का दामन पकड़ लिया और आप को भयानक चेहरे के साथ देखा फिर कहाः हे मुहम्मद! क्या तुम मेरा हक़ (कर्ज़) नहीं लौटाओ गे? अल्लाह की क़सम मैं बनू अब्दुल-मुत्तलिब को टाल मटोल करने वाला नहीं जानता और मुझे तुम्हारे मेल जोल (मामले दारी) का पता है। ज़ैद का कहना हैः मैं ने उमर बिन खत्ताब को देखा कि उनकी दोनों आँखें उनके चेहरे में गोल आसमान के समान घूम रही हैं, फिर उन्होंने मेरी तरफ निगाह की और कहाः ऐ अल्लाह के दुश्मन! क्या तू अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ऐसी बात कर रहा है जो मैं सुन रहा हूँ और आप के साथ ऐसा व्यवहार कर रहा है जो मैं देख रहा हूँ? उस ज़ात की क़सम जिसने आप को हक़ के साथ भेजा है अगर मुझे एक चीज़ के छूट जाने का डर न होता तो मैं अपनी इस तलवार से तेरी गर्दन उड़ा देता। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुकून व इतमिनान से उमर को देख रहे थे। फिर आप ने फरमायाः

“ऐ उमर! हम इस से कहीं अधिक ज़रूरत मंद दूसरी चीज़ के थे कि तुम मुझे अच्छी तरह क़र्ज़ की अदायगी के

लिए कहते और उसे अपने हक़ को अच्छी तरह से मांगने का हुक्म देते। ऐ उमर! इसे ले जाओ और इसका क़र्ज़ वापस कर दो और तुम ने जो इसे भयभीत किया है उसके बदले २० साअ् और अधिक दे दो।''

ज़ैद ने बयान किया: चुनांचे उमर मुझे लेकर गए और मेरा क़र्ज़ अदा किया और बीस साअ खजूर और अधिक दिया। मैं ने कहा: यह अधिक क्यों दे रहे हैं? उन्हों ने कहा: अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे आदेश दिया है कि मैं ने जो आप को डराया-धमकाया है उसके बदले कुछ अधिक दे दूँ। मैं ने कहा: ऐ उमर! क्या तुम मुझे पहचानते हो? उन्हों ने कहा: नहीं, अच्छा बताओ तुम कौन हो? मैं ने कहा: मैं ज़ैद बिन सअ्ना हूँ। उन्हों ने कहा: वही यहूदियों का आलिम? मैं ने कहा: हाँ, वही विद्वान। उन्हों ने कहा: तू ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो कुछ कहा और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जो कुछ तुम ने किया तुझे इस पर किस चीज़ ने उभारा? मैं ने कहा: ऐ उमर, मैं ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखते ही आप के चेहरे में नुबुव्वत (ईश्दूतत्व—पैग़म्बरी) की सारी निशानियाँ पहचान लीं, केवल दो निशानियाँ आप के अन्दर जांचनी रह गई थीं; उनका तहम्मुल और बुर्दबारी उनकी जहालत से बढ़

कर होगी और उनके साथ जितना अधिक जहालत से पेश आया जाए गा वह उतना ही अधिक बुर्दबारी और तहम्मुल से पेश आयेंगे। अब मैं ने इन दोनों निशानियों को भी जाँच लिया। ऐ उमर, मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैं अल्लाह को अपना रब (पालनहार) मान कर, इस्लाम को अपना धर्म मान कर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना ईश्दूत (पैग़म्बर) मान कर प्रसन्न हो गया। और मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मेरा आधा धन - और मैं मदीना में सबसे अधिक धनी हूँ- मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत (समुदाय) पर ख़ैरात है। उमर ने कहाः बल्कि उनमें से कुछ लोगों पर, क्योंकि तुम्हारा धन उन सब के लिए काफी (पर्याप्त) नहीं होगा। मैं ने कहाः बल्कि उन में से कुछ लोगों पर। फिर उमर और ज़ैद पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास लौट कर आए तो ज़ैद ने कहाः मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत का योग्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दा (उपासक) और पैग़म्बर हैं। इस प्रकार वह ईमान ले आया, आप को सच्चा मान लिया और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बहुत सी जंगों में उपस्थित रहा, फिर तबूक के जंग में आगे बढ़ते हुए शहीद होगए,

अल्लाह तआला ज़ैद पर रहमतों की वर्षा करे। (सहीह इब्ने हिब्बान)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क्षमा और माफी का सब से बड़ा उदाहरण यह है कि जब आप मक्का में विजेता बन कर दाखिल हुए और आप के सामने मक्का के वह लोग पेश हुए जिन्हों ने आपको नाना प्रकार की तकलीफें (यातनाएं) पहुंचाई थीं और जिनके कारण आपको अपने शहर से निकलना पड़ा था, तो आप ने उस समय जब वह मस्जिद में एकत्र हुए उनसे कहाः "तुम्हारा क्या ख्याल है मैं तुम्हारे साथ क्या करने वाला हूँ? उन्होंने कहाः अच्छा ही, आप करम करने वाले भाई हैं और करम करने वाले भाई के बेटे हैं। आप ने फरमायाः "जाओ तुम सब आज़ाद हो !" (सुनन बैहक़ी अल-कुब्रा)

31. सब्र (धैर्य) : पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब्र और तहम्मुल के पैकर थे। चुनांचे अपनी दावत शुरू करने से पहले आप की क़ौम जो काम करती थी और बुतों की पूजा करती थी उस पर सब्र करते थे, और अपनी दावत का आरम्भ करन के बाद अपनी क़ौम की ओर से मक्का में जो नाना प्रकार की कठिनाईयाँ और परेशानियाँ झेलनी पड़ीं उन पर सब्र किया और उस पर

अल्लाह के पास अच्छे बदले की आशा रखी। उसके बाद मदीना में मुनाफिक़ों (द्वय वादियों) के साथ सब्र से काम लिया।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने रिश्तेदारों और प्रिय लोगों की वफात पर सब्र का आदर्श थे; आपकी बीवी ख़दीजा की मृत्यु होगई, फातिमा के सिवाय आपके सारे बाल-बच्चे आप के जीवन ही में मर गए, आपके चचा अबू-तालिब और हम्ज़ा का देहान्त हो गया; इन तमात हालतों में आप ने सब्र से काम लिया और अल्लाह तआला से पुण्य की आशा रखी।

अनस बिन मालिक कहते हैं: हम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अबू-सैफ लोहार के पास गए। उसकी बीवी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेटे इब्राहीम को दूध पिलाती थी। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इब्राहीम को लिया, उनको चुंबन किया और सूँघा। इसके बाद फिर हम अबू-सैफ के पास गए, उस समय इब्राहीम की जान निकल रही थी। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों से आँसू बहने लगे। इस पर अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने कहा: ऐ अल्लाह के पैग़म्बर, आप भी (रो रहे हैं)!! आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ने फरमायाः "ऐ इब्ने औफ, यह रहमत और शफक़त के आँसू हैं"। इसके बाद फिर उन्होंने कहा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "आँख आँसू बहाती है, दिल दुखी है और हम केवल वही कहते हैं जो अल्लाह को पसन्द है। ऐ इब्राहीम, हम तेरी जुदाई पर दुखी है"। (सहीह बुख़ारी)

32. अद्ल और इन्साफ (न्याय) : पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने जीवन के तमाम मामलों में न्याय करने वाले थे, अल्लाह की शरीअत (क़ानून) को लागू और नाफिज़ करने में इन्साफ से काम लेते थे। आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैंः मख़जूमी औरत का मामला जिसने चोरी की थी कुरैश के लिए महत्वपूर्ण बन गया तो उन्हों ने आपस में कहाः इस के बारे में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कौन बात करेगा? उन्होंने कहाः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चहेते उसामा बिन ज़ैद के सिवा इसकी हिम्मत कौन कर सकता है। उसामा ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस बारे में बात की तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "क्या तुम अल्लाह के एक हद (धार्मिक दण्ड) के बारे में सिफारिश करते हो !!" फिर आप खड़े हुए और खुत्बा (भाषण) देते हुए फरमायाः "तुम से पहले के लोग इस

कारण तबाह कर दिए गए कि जब उनके अन्दर कोई शरीफ (खानदान वाला) चोरी करता था तो उसे छोड़ देते थे और अगर उनके अन्दर कोई नीच आदमी चोरी करता था तो उस पर हद (दण्ड) लगाते थे। अल्लाह की क़सम! अगर मुहम्मद की बेटी फातिमा भी चोरी करे तो मैं उसका हाथ काट दूँगा''। (सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने नफ़्स से बदला लेने में भी न्याय करने वाले थे, उसैद बिन हुज़ैर कहते हैं: एक अन्सारी आदमी लोगों से बात कर रहा था और वह कुछ मनोरंजक आदमी था, इस बीच कि वह लोगों को अपनी बातों से हंसा रहा था पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी कमर पर एक लकड़ी से मार दिया, तो उसने कहा मुझे बदला दीजिए, आप ने कहा: ''बदला ले लो'' उसने कहा: आप क़मीस पहने हुए हैं और मैं बिना क़मीस के हूँ, इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी क़मीस उठा दी, तो वह आप से चिमट गया और आपके पहलू (पेट) को चूमने लगा, और कहा: ऐ अइल्लाह के पैग़म्बर! मैं यही चाहता था। (सुनन अबू दाऊद)

33. अल्लाह का डर और ख़ौफ: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों में सब से अधिक अल्लाह से डरने

वाले और उसका ख़ौफ रखने वाले थे। अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझ से फरमाया: "मुझे कुरआन पढ़ कर सुनाओ"। मैं ने कहा: ऐ अल्लाह के पैग़म्बर, मैं आप को कुरआन पढ़ कर सुनाऊँ जबकि वह आप ही पर उतरा है!? आप ने कहा: "हाँ," तो मैं ने आप को सूरतुन-निसा पढ़ कर सुनाई यहाँ तक कि मैं इस आयत पर पहुँचा:

﴿فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلَاءِ شَهِيداً﴾ [النساء:٤١]

"पस क्या हाल होगा जिस समय कि हम हर उम्मत में से एक गवाह लायें गे और आप को इन लोगों पर गवाह बनाकर लायें गे।" (सूरतुन-निसा:४१)

आप ने फरमाया: "बस अब काफी है"। मैं ने आप की ओर देखा तो आप की दोनों आँखों से आँसू बह रहे थे।

(सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब आसमान पर गहरे बादल देखते तो कभी आगे होते कभी पीछे होते, कभी अन्दर दाखिल होते और कभी बाहर निकलते और आप का

चेहरा बदल जाता। जब बारिश होजाती तो आप इत्मिनान की साँस लेते। आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप से इसका कारण पूछा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ''मुझे क्या मालूम कि शायद वह ऐसे ही हो जैसे कि एक क़ौम ने कहा था:

﴿فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضاً مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُم بِهِ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ [الأحقاف:٢٤]

''फिर जब उन्हों ने बादल के रूप में अज़ाब को देखा अपनी घाटियों की ओर आते हुए तो कहने लगे, यह बादल हम पर बरसने वाला है, (नहीं) बल्कि दरअसल यह बादल वह (अज़ाब) है जिस की तुम जल्दी मचा रहे थे, हवा है जिस में दर्दनाक (कष्ट दायक) अज़ाब है''। (सूरतुल-अहक़ाफ:२४) *(सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम)*

34. क़नाअत -सन्तोष- और दिल की बेनियाज़ी:

उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: मैं पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया तो मैं ने आप को एक चटाई पर पाया जिसके और आपके बीच कोई चीज़ नहीं थी (चटाई पर कोई चीज़ नहीं बिछी थी) और आपके सिर के नीचे चमड़े का एक तकिया था जो खजूर

के पेड़ की छाल से भरा हुआ था और आप के पैर के पास चमड़े का एक पानी का बर्तन था और आपके सिर के पास कुछ कपड़े टंगे हुए थे। मैं ने चटाई का निशान आप के पहलू में देखा तो रो पड़ा। आप ने कहाः तुम क्यों रो रहे हो? मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर, क़ैसर और किस्रा इस दुनिया का आनन्द ले रहे हैं और आप अल्लाह के पैग़म्बर हैं (और आपकी यह हालत है!) आप ने कहाः "क्या तुम्हें यह पसन्द नहीं कि उनके लिए दुनिया हो और हमारे लिए आख़िरत की नेमतें हों।" (सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम)

35. तमाम लोगों यहाँ तक कि अपने दुश्मनों का भी भला चाहते थेः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैंः मैं ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि क्या आप पर कोई ऐसा दिन भी आया है जो उहुद के दिन से भी अधिक कठिन रहा हो? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "मुझे तुम्हारी क़ौम की ओर से जिन जिन मुसीबतों का सामना हुआ वह हुआ ही, और उन में से सब से कठिन मुसीबत वह थी जिस से मैं घाटी के दिन दो चार हुआ, जब मैं ने अपने आप को अब्द-यालील पुत्र अब्द-कुलाल के बेटे पर पेश किया, किन्तु उसने मेरी बात

न मानी तो मैं दुख से चूर, ग़म से निढाल अपनी दिशा में चल पड़ा और मुझे क़र्नुस-सआलिब नामी स्थान पर पहुँच कर ही इफ़ाक़ा हुआ। मैं ने अपना सिर उठाया तो क्या देखता हूँ कि बादल का एक टुकड़ा मुझ पर छाया किए हुए है। मैं ने ध्यान से देखा तो उसमें जिब्रील थे। उन्हों ने मुझे पुकार कर कहाः आप की क़ौम ने आप से जो बात कही और आप को जो जवाब दिया अल्लाह ने उसे सुन लिया है। उसने आप के पास पहाड़ का फरिश्ता भेजा है ताकि आप उनके बारे में उसे जो आदेश चाहें, दें। उसके बाद पहाड़ के फरिश्ते ने मुझे आवाज़ दी और मुझे सलाम करने के बाद कहाः ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! बात यही है, अब आप जो चाहें, अगर आप चाहें कि मैं इन को दो पहाड़ों के बीच कुचल दूँ (तो ऐसा ही होगा)। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "नहीं, बल्कि मुझे आशा है कि अल्लाह तआला इनकी पीठ से ऐसी नस्ल पैदा करे गा जो केवल एक अल्लाह की इबादत (उपासना) करे गी और उसके साथ किसी चीज़ को साझी नहीं ठहराए गी।" (सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम)

इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैंः जब अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल की मृत्यु होगई तो उसका बेटा

अब्दुल्लाह, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और आप से आप की क़मीस मांगी ताकि उसमें अपने बाप को कफनाए तो आप ने उसे अपनी क़मीस दे दी। फिर उसने आप से निवेदन किया कि उसका जनाज़ा पढ़ा दें तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसका जनाज़ा पढ़ाने के लिए तैयार हो गये। इस पर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और आप के कपड़े को पकड़ कर कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप उसका जनाज़ा पढ़ायें गे जबकि अल्लाह तआला ने आप को उस पर जनाज़ा पढ़ने से रोक दिया है? पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''अल्लाह तआला ने मुझे छूट दिया है, फरमायाः

﴿اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لاَ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِن تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً ...﴾ [التوبة:٨٠]

''आप उनके लिए क्षमा याचना करें या क्षमा याचना न करें, अगर आप उनके लिए सत्तर बार भी क्षमा याचना करें...'' (सूरतुत-तौबाः८०)

और मैं सत्तर से भी अधिक बार क्षमा याचना करूँगा''। उन्हों ने कहाः यह मुनाफिक़ है। चुनांचे आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने उसका जनाज़ा पढ़ा और इस पर अल्लाह तअला ने यह आयत उतारी:

﴿وَلاَ تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِّنْهُم مَّاتَ أَبَداً وَلاَ تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ﴾

[التوبة:٨٤]

''उन में से जो मर जाए आप उस पर कभी भी जनाज़ा न पढ़ें और न ही उसकी क़ब्र पर खड़े हों''।
(सूरतुत-तौबाः८४) (सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम)

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*
attazia75@gmail.com